बी० ए० पार्ट-I, पेपर-II

डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर, हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय,
सासाराम, रोहतास

दिनांक
02/05/2020

Scanned with CamScanner

'उसने कहा था' कहानी का सारांश

'उसने कहा था' कहानी है, कहानीकार चंद्रधर शर्मा गुलेरी हैं। यह एक दिव्य प्रेम पर प्राणोत्सर्ग की कहानी है। यह एक युद्ध की कहानी भी है। अमृतसर की भीड़ भरी सड़कों पर एक लड़का और एक लड़की दुकान पर मिलते हैं। लड़के ने मुसकुराकर पूछा - 'तेरी कुड़माई हो गई। इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत' कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया। यहाँ प्रेम के बीज का अंकुरण होता है।

दूसरे-तीसरे दिन दोनों फिर मिले। महीना भर यही हाल रहा। शादी के बारे में पूछने पर लड़की ने कहा - 'देखते नहीं यह, रेशम से कढ़ा हुआ सालू। लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली।'

दूसरे अंक की कहानी में युद्ध का वर्णन आता है। यह प्रपंच विश्वयुद्ध का वर्णन है। खंदकों में बैठे सैनिकों की हड्डियाँ अकड़ जाती हैं, जो कहीं खंदक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई तो चटाक से गोली लगती है। युद्ध के मोर्चे पर लहना सिंह, अमृतसर की सड़क पर मिलने वाले लड़का - लड़की हैं। पच्चीस वर्ष बाद की बात है - भारतीय सैनिक अंग्रेजों के साथ जर्मनी से लड़ रहे हैं। ठंढक ज्यादा है। हड्डियों में जाड़ा धँस जाता है।

लहना सिंह को बचपन की याद आती है। कुड़माई हो गयी कहने वाली लड़की आज सूबेदारनी है। वह कहती है - मेरा बेटा बोधा सिंह और मेरे पति हजारा सिंह दोनों जा रहे हैं। बचपन में तुमने मुझे एक दुर्घटना में मरने से बचाया था। हीर, इसी तरह मेरे पति और बेटे की रक्षा करना। सूबेदारनी आँचल पसारकर लहना सिंह से यह भिक्षा माँग रही थी। वह अन्दर चली गयी। लहना सिंह आँसू पोंछता बाहर आया। तीनों युद्ध के लिए चल देते हैं। ये तीनों अंग्रेजी सेना के सिपाही थे। फ्रांस की भूमि पर जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिए जाते हैं।

वहाँ भीषण ठंढक पड़ रही थी। वर्षा भी हो रही थी। कीचड़ में पैर धँस जाते थे। लहना सिंह युद्ध में लड़ता है। बोधा सिंह

Scanned with CamScanner

को ठंडक लग रही थी। अंगीठी जलाकर वे ठंडक का सामना करते हैं। लहना सिंह, बोधा सिंह के बदले में पहरा दे आता था। बोधा सिंह को लहना सिंह सूखी लकड़ी पर सुलाता था। स्वयं वह कीचड़ में खड़ा रहता था। लहना बुखारग्रस्त बोधा को अपनी जर्सी ओढ़ा देता था।

लहना सिंह को लपटन साहब पर संदेह हो गया। सिक्ख सिगरेट नहीं पीते। साहब के बाल नहीं थे। वे लपटन साहब नहीं थे। वजीरा को खन्दक में सूचित किया कि एक नकली वेश में जर्मन सिपाही आया है।

लहना सिंह ने देखा- जर्मन लपटन ने जेब से बेल के आकार के तीन गोले निकालकर जगह- जगह खन्दक की दीवारों में खोंस दिये।

लहना सिंह ने कसकर साहब की कुहनी पर बंदूक मारी। साहब की जब बेहोशी हटी तो उसने जेब से पिस्तौल निकालकर चला दी।

लहना सिंह की जाँघ में गोली लगी। दो फायर से लहना सिंह ने साहब की कपाल क्रिया कर दी। इसी समय जर्मन सिपाहियों ने धावा बोल दिया। लहना सिंह ने निशाना साधकर जर्मनों का सफाया कर दिया। लहना सिंह की छाती-पसली में एक गोली लगी। लहना सिंह ने साफा बाँधा। वह नहीं होता तो हजारा सिंह, बोधा सिंह सभी मारे गए होते।

दो गाड़ियाँ घायलों को लेने आ पहुँची। 'सूबेदार हजारा सिंह स्वयं घायल थे। पर वह लहना सिंह को छोड़कर नहीं जा रहे थे। लहना ने उसे बताया कि उसका घाव मामूली है। तुम्हें बोधा की कसम है कि इस गाड़ी में चले जाओ। उसने गाड़ी पर दोनों पर पिता-पुत्र को चढ़ाया और कहा कि सूबेदारनी को चिट्ठी लिखोगे तो यह लिख देना होगा कि जो उसने कहा था, वह मैंने कर दिया।

गाड़ी चली गयी तो लहना लेट गया। उसकी कमर खून से लथपथ थी। उसने कहा - 'वजीरा पानी पिला' दे। बचपन की सारी स्मृतियाँ साफ होकर आयीं। लहना सिंह के घाव से लगातार तेजी से खून बह रहा था और खून चल रहा था। सूबेदारनी कह रही थी। लहना सिंह कहता जा रहा था - 'वजीरा पानी पिला दे, उसने कहा था।' इस प्रकार कुछ देर बाद लहना

Scanned with CamScanner

सिंह की मृत्यु हो गयी।

'उसने कहा था' कहानी फ्लैश बैक तकनीक में कही गयी कहानी है। यह एक उत्कृष्ट कहानी है। "इसमें पक्के यथार्थवाद के बीच सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर, भावुकता का चरम उत्कर्ष, अत्यंत निपुणता के साथ संपुटित है।" इसमें प्रेम का स्वर्गीय रूप झाँकता नजर आता है।

गुलेरी जी की यह कहानी उदात्त वीरता, उदात्त त्याग और उदात्त प्रेम की अनोखी कहानी है।

Scanned with CamScanner